इकाई 17 1911 की चीनी क्रांति

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद :

- आपको चीनी क्रांति के लिए उत्तरदायी कारणों की जानकारी होगी,
- आप मांचू शासकों द्वारा अपने शासन को मजबूत करने तथा आधुनिक राज्य की स्थापना के लिए लागू किये गये सुधारों के विषय में जान सकेंगे,
- आप उन सामाजिक शक्तियों के बारे में समझेंगे जिनका उद्भव चिंग शासन से देश की रक्षा करने के लिए हुआ था,
- आप चिंग शासन और विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों के विरोध में एक मजबूत शक्ति के रूप में चीनी राष्ट्रवाद के उदय को समझ सकेंगे,
- चीनी समाज के उन विभिन्न वर्गों के विषय में आपका एक दृष्टिकोण बनेगा जो राष्ट्रवाद के उदय के लिए मुख्य शक्ति थे, और
- आपको 1911 की क्रांति एवं इसके परिणामों का भी बोध हो जाएगा।

17.1 प्रस्तावना

इकाई 15 में हम देख चुके हैं कि 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में किस तरह से चिंग राज्य को सीमित सुधारों के कार्यक्रम शुरू करने के लिए बाध्य किया गया। शताब्दी के अंत तक बढ़ते हुए साम्राज्यवादी खतरे के साथ-साथ अधिक व्यापक सुधारों के लिए एक संक्षिप्त प्रयास किया गया। सुधार के ये सभी प्रयास समाज और सत्ता की ऊपरी परत से किये गये थे इसलिए इन्होंने चीन के साम्राज्यिक राजनीतिक ढांचे की प्रासंगिकता पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं लगाया। सुधारों को लागू करने का एकमात्र उद्देश्य था कन्फ्यूशियसवादी परंपरा एवं

राजनीतिक प्रणाली को सुदृढ़ करना एवं बनाये रखना। 1898 के सुधार आंदोलन का जीवन संक्षिप्त था, लेकिन इस सुधार आंदोलन ने ऐसी प्रवृत्तियों का प्रारंभ किया जो 20वीं सदी के प्रथम दशक में चिंग एवं राजनीतिक ढांचे के ऊपर हावी बनी रही। 1911 की चीनी क्रांति इस प्रक्रिया की अंतिम परिणिति थी।

यह क्रांति कई कारणों से हुई। कुलीन वर्ग एवं किसानों के बीच असंतोक्ष बढ़ रहा था। ऐसे नये सामाजिक समूह जिन्होंने आर्थिक परिवर्तनों से शक्ति प्राप्त की थी – व्यवस्था की आलोचना करने में और अधिक उग्र हो गये। यद्यपि 1898 के सुधारों को वापस ले लिया गया था किंतु 20वीं सदी के प्रथम दशक में चिंग वंश ने अपना शासन बचाने के लिए इन सुधारों को पुनः लागू किया। लेकिन राज्य ने जब इन सुधारों को लागू किया तब इसके विपरीत परिणाम हुए। पुनर्गठित की गई सेनायें चिंग के विरुद्ध हो गई और 19वीं सदी के अंत से विकसित होती राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति गुप्त संगठनों के रूप में हुई और समाज के बहुत से वर्गों में असंतोष बढ़ने लगा। इस पृष्ठभूमि में सन यात सेन का उद्भव हुआ और उसे नवीन चीन का प्रतीक समझा जाने लगा। 1911 की क्रांति के अन्य बहुत से पक्ष थे और उनका इस इकाई में विस्तार से विवरण किया गया है।

17.2 चिंग के सुधार

मांचू शासकों ने अपने वंशीय शासन को बनाये रखने के लिए सुधारों को उस समय लागू किया जबकि उनका शासन विनाश के कगार पर था। ये सुधार कांग यू-वी के द्वारा प्रस्तावित सुधारों से कहीं अधिक क्रांतिकारी थे। सुधार तीन क्षेत्रों पर केंद्रित थे : शिक्षा, सेना और प्रशासनिक एवं संस्थात्मक संगठन। सुधारों को न्यायालय एवं झांग झी-डांग तथा युआन शि-काई जैसे बड़े अधिकारियों ने लागू किया। ये सुधार चिंग राज्य की शक्ति का अंतिम प्रदर्शन थे और ऐसे आधुनिक राज्य के ढांचे को बनाने का प्रयास थे जो इसको जीवित बनाये रखने को सुनिश्चित कर सके।

17.2.1 शैक्षिक सुधार

जनवरी 1901 में जिन सुधारों की घोषणा की गई थी उनमें शिक्षा व्यवस्था का सुधार सबसे महत्वपूर्ण था। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध से ही ऐसे बहुत से सुझाव दिये जा रहे थे कि परंपरागत शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन किये जाने की आवश्यकता थी। झांग झी-डोंग अपनी आलोचना में काफ उग्र था और उसका तर्क था कि आधुनिक राज्य प्रशासन के निर्माण के लिए शिक्षा एवं प्राथमिक शिक्षा की नवीन प्रणाली की आवश्यकता थी। 1901 से 1906 के बीच शिक्षा के मूल तत्व में परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा व्यवस्था को पुनर्गठित करने के लिए शाही आदेशों की एक श्रृंखला को पारित किया गया। 1901 में परंपरागत आठ-सुधारों वाले निबंध को समाप्त कर दिया गया। अब विद्यार्थीगण चीन के इतिहास विश्व इतिहास, भूगोल, गणित तथा विज्ञान का अध्ययन करते थे।

पदानुक्रम में स्कूलों के तंत्र को व्यवस्थित करते हुए योजनाबद्ध किया गया था। जिलों के स्तर पर प्राथमिक स्कूलों, मंडलों के स्तर पर हाई स्कूलों तथा प्रत्येक प्रांत में एक कालिज को खोलने की योजना बनी। 1905 में परीक्षा पद्धति को स्वयं ही समाप्त कर दिया गया। शिक्षा के इस आधुनिकीकरण को प्रांतीय कुलीनों एवं प्रबुद्ध वर्ग का सक्रिय समर्थन प्राप्त हुआ। चीन में 1909 के आस-पास 100,000 आधुनिक स्कूल थे। इन सुधारों का प्रभाव एक दशक के अंदर ही महसूस किया जाने लगा। पुरानी परीक्षा पद्धति का उद्देश्य न केवल नौकरशाहों को भर्ती करना था अपितु प्रांतीय कुलीनों एवं प्रबुद्ध वर्गों को सांस्कृतिक एवं वैचारिक स्तर पर शासक वंश के साथ जोड़कर रखना भी था। पुरानी परीक्षा पद्धति की समाप्ति से राजतंत्रीय राज्य के साथ कुलीनों के संबंध धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगे।

17.2.2 सैन्य सुधार

19वीं सदी के अंत में मांचू सेना के आधार स्तंभ मांचू पताकायें एवं क्षेत्रीय सेनायें थी और ये 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अस्तित्व में आयी थी। मांचू पताका चिंग शासन के प्रारंभ में अस्तित्व में आयी। ताइपिंग विद्रोह का दमन करने के लिए जेंग जुओ-फेन ली होंग-झांग तथा जुओ-जोंग तांग ने क्षेत्रीय सेना: की भर्ती की थी। इन सेनाओं में अपने क्षेत्रीय नेताओं के नजदीकी एवं उनके प्रति वफादार व्यवसायिक सैनिकों को शामिल किया गया था।

बॉक्सर विद्रोह के दौरान सेना की भयंकर पराजय ने सेना में सुधार करना अति आवश्यक कर दिया। 1901 में यह तय किया गया कि पताका व्यवस्था को प्रतिबंधित कर दिया जाएगा। सेनाओं को प्रांतीय सैनिक विद्यालयों में प्रशिक्षित किया जाएगा। परंपरागत सैन्य परीक्षा पद्धति को समाप्त कर दिया गया। सेना को सुरक्षित इकाइयों सहित पश्चिमी पद्धति के आधार पर संगठित किया जाने लगा। लेकिन इन उपायों के द्वारा भी सेना में बढ़ते क्षेत्रीयवाद तथा व्यक्तिगत वफादारियों को न रोका जा सका।

1901 से 1906 के बीच युआन शि-काई ने सेना में सुधार के महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 1905 में उसने उत्तरी सेना (जिसे बेयांग सेना कहा जाता था) की छः डिवीजनों का निर्माण किया। इस सेना के पास आधुनिक हथियार थे और इसके अधिकारियों को विदेशों या नये सैनिक विद्यालयों में प्रशिक्षित किया गया था। इसके पास जापानी प्रशिक्षक थे। इस सेना की इकाईयां व्यक्तिगत तौर पर युआन शि-काई के प्रति वफादार थी। इसी कारणवश वह इस सेना पर बहुत अधिक निर्भर था और उसने मांचू विरोध एवं शासक वंश विरोधी सेनाओं का साथ दिया।

17.2.3 प्रशासनिक एवं संस्थात्क सुधार

प्रशासन को चुस्त एवं कड़ा करने के लिए बहुत से सुधार किये गये। मांचू तथा चीनी अधिकारियों के बीच संतुलन के सिद्धांत का परित्याग कर दिया गया। कोटे की अनिवार्य नौकरियों को समाप्त कर दिया गया। इससे मांचुओं को फायदा हुआ और चीनी अधिकारियों में इसके कारण बहुत अधिक असंतोष पैदा हुआ।

राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने के प्रयास में चिंग ने संसदात्मक तौर-तरीकों से राजनीतिक व्यवस्था के सुधार की घोषणा की। शासक एवं शासित के बीच घनिष्ठ संबंधों की आवश्यकता पर बल देते हुए राज्य ने संवैधानिक सुधारों के कार्यक्रम का प्रारम्भ किया। इस सुधार की प्रेरणा जापान से प्राप्त की गई थी और जापान के विषय में यह समझा गया कि मेजी सुधारों तथा डायट के निर्माण के द्वारा मेजी सम्राट अपनी जनता के संसाधनों को प्राप्त करने में सफल हुआ था। जुलाई 1905 में महारानी दावागर ने एक आयोग का गठन किया। इस आयोग की स्थापना लागू करने योग्य राजनीतिक सुधारों के लिए सरकार को सलाह देने के लिए की गई थी। अगस्त 1907 में एक संवैधानिक सरकारी आयोग का भी गठन किया गया। संपूर्ण देश में अधिकारियों ने संसदात्मक सरकार के स्वरूप के पक्ष में भरपूर समर्थन दिया। सरकार ने संवैधानिक सभा एवं प्रान्तीय सभाओं के निर्माण का वायदा किया। अगस्त 1908 में उन संवैधानिक सिद्धांतों की घोषणा की गई जो परिवर्तन का आधार बनने थे। स्थानीय स्वायत्त शासन के अंतर्गत तुरंत ब्यूरो का निर्माण किया जाने वाला था। प्रान्तीय सभाओं के लिए 1909 में चुनाव होने वाले थे। लेकिन संसद का कार्य केवल 1917 में ही शुरू हो सका। गौंन शू सम्राट तथा सी-क्सी की जल्दी ही 1908 में मृत्यु हो गई। सिंहासन का उत्तराधिकारी पू-ची था और उसने यौन-तोंग सम्राट के रूप में 1909 से 1912 तक शासन किया। उसका पिता प्रिंस चिन रिजेन्ट बन गया था। लेकिन उसके पिता ने सी-क्सी के मुख्य सलाहकार युआन शि-काई से दूरी को बनाकर रखा और उसने अधिक रूढ़िवादी नीति का अनुसरण किया जो सुधारों के पक्ष में न थी।

इन राजनीतिक परिवर्तनों के उद्देश्य को जिस तरह से चिंग राज्य एवं कुलीन वर्ग ने समझा उसमें एक मूलभूत विरोधाभास था। चिंग शासन कर्ताओं के लिए ये सुधार किसी भी प्रकार से साम्राज्यिक संप्रभुता या शक्ति को कमजोर करने के लिए न थे लेकिन प्रान्तीय कुलीनों ने इन सुधारों का यह अभिप्राय लगाया कि वास्तव में सत्ता का हस्तांतरण स्थानीय एवं प्रान्तीय स्तरों पर होगा।

इसी के साथ-साथ अन्य कई प्रकार की समस्याएं थीं। चुनाव अपरिहार्य तौर पर समाज के प्रबुद्ध वर्ग के लिए था। चुनाव के लिए संपत्ति एवं शैक्षिक योग्यताओं ने यह सुनिश्चित कर दिया था कि सामान्य व्यक्ति जनमत का उपयोग नहीं कर सके। चुनाव में प्रत्याशी बनने के लिए 5,000 तायन्स से अधिक की वार्षिक आमदनी या प्रान्तीय डिग्री या नये माध्यमिक स्कूलों में किसी एक से स्नातक होना आवश्यक था। इसलिए स्वाभाविक ही था कि प्रान्तीय सभाओं की सदस्यता पर उच्च कुलीनों का वर्चस्व था। उदाहरण के तौर पर, शातुंग के प्रान्त की कुल जनसंख्या 3 करोड़ 80 लाख में से मात्र 119,000 लोगों को मताधिकार प्राप्त था और हुबाई में 3 करोड़ 40 लाख में से 113,000 को।

सीमित मताधिकार के बावजूद भी ये संस्थाएं विरोध का केन्द्र हो गई थीं। फरवरी 1910 में

पैकिंग की एक सभा में प्रतिनिधियों ने मांग की कि संसद को तुरंत बुलाया जाए। परिणामस्वरूप अक्तूबर 1910 में एक राष्ट्रीय सलाहकार सभा का आयोजन किया गया। इस सभा के आधे सदस्यों को सरकार द्वारा नियुक्त किया गया था। बढ़ते दबाव के कारण प्रिंस चुन ने वायदा किया कि 1913 के आस-पास एक वास्तविक संसद को बुलाया जाएगा। अन्तरिम उपाय के तौर पर 1911 में एक मंत्रिपरिषद का गठन किया गया और इसके अंदर मुख्य रूप से राजकुमार एवं मांचू वंश के कुलीन थे। ठीक इसी समय बहुत से प्रान्तों में सशस्त्र संघर्ष भड़क उठा और यह मांचू वंश के निर्णायक पतन की शुरुआत थी।

सुधारों की असफलता के कारण ऐसी आर्थिक एवं सामाजिक अव्यवस्था व्याप्त हुई जिसने चीन को हिला कर रख दिया और इस तरह का असंतोष उत्पन्न हो गया जिसको आधे अधूरे उपायों से संतुष्ट नहीं किया जा सकता था।

बोध प्रश्न 1

1) चिंग वंश द्वारा किए गए शैक्षिक सुधारों का 10 पंक्तियों में विवरण दीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) चिंग शासकों द्वारा 20वीं सदी के प्रारंभिक दशक में किए गए प्रशासनिक एवं संस्थात्मक सुधारों के उद्देश्यों का 10 पंक्तियों में विवेचन कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

17.3 अर्थव्यवस्था की स्थिति और विदेशी स्वार्थ

20वीं शताब्दी के प्रारंभ तक चीन में विदेशी प्रभाव क्षेत्र का प्रसार पर्याप्त मात्रा में हो चुका था। 1902 से 1910 तक विदेशी पूंजी का निवेश 78 करोड़ 30 लाख से बढ़ कर 161 करोड़ तक बढ़ गया। इस धन का अधिकतम भाग रेलवे निर्माण, खान तथा अन्य औद्योगिक व्यवसायों में लगा था।

इसके फलस्वरूप बहुत से परिवर्तन ए। विदेशी पूंजीपतियों के द्वारा प्रस्तुत की गई इस चुनौती के कारण चीन में भी आधुनि क कंपनियों के उत्थान को प्रोत्साहन मिला। उदाहरण के तौर पर चीन में प्रथम आधुनिक ैंकों की स्थापना 1897 में कमर्शियल बैंक ऑफ चाइना

तथा 1907 में बैंक ऑफ कम्युनिकेशन तथा हुबू बैंक के रूप में हुई। इन सबके फलस्वरूप प्राइवेट कंपनियों का विकास हुआ। 1904 में प्राइवेट कंपनियों के सम्मिलन की आज्ञा प्रदान कर दी गई। 1908 तक उद्योग मंत्रालय, कृषि एवं वाणिज्य मंत्रालयों के साथ 227 कंपनियां रजिस्टर्ड थीं।

राष्ट्रीय आधुनिक सेक्टर की वृद्धि असमान थी। प्राथमिक तंत्रीय सुविधाओं का अभाव, व्यापारियों एवं अधिकारियों में व्याप्त अविश्वास जैसी बहुत सी समस्याएं थीं। इसके अलावा स्वदेशी कंपनियां विदेशियों के साथ प्रतियोगिता करने में सक्षम थीं। चीन के द्वारा कस्टम में स्वायत्तता खो देने के कारण सरकार बाजार को सुरक्षित नहीं कर सकती थी। पश्चिमी सामानों को आंतरिक करों से मुक्त कर दिया गया था। सरकारी कोष पर बहुत अधिक भार पड़ जाने से सरकार भी स्वयं धन निवेश करने की स्थिति में नहीं थी और ऐसा इसलिए हुआ था कि चीन को भारी युद्ध हर्जाने को अदा करना पड़ा। बॉक्सर संधि की शर्तों के अनुसार उसको 1902 से 1910 तक 22 करोड़ 40 लाख तॉयल युद्ध हर्जाने के तौर पर अदा करने थे। यह अनुमान लगाया गया है कि चिंग का वार्षिक बजट 9 करोड़ तॉयल का था। संतुलन बनाये रखने के लिए ऐसे विदेशी ऋणों को लेना पड़ा जिसने आर्थिक स्थिति को और खराब कर दिया। बिना उधार लिए चीन के पास निवेश हेतु कोई धन न था। गहरे आर्थिक संकट के बावजूद राज्य एवं अर्थव्यवस्था के रूपांतरण के महत्वपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक परिणाम निकले।

17.4 विरोधी शक्तियां

इस समय में चीन के अंदर नवीन सामाजिक शक्तियों का उदय हुआ। उदाहरण स्वरूप संधि बंदरगाहों में पूंजीपतियों एवं बिचौलियों के रूप में एक बुर्जुआ वर्ग का उदय हुआ। चीन के सभी सहयोगी पूंजीपति विदेशी कंपनियों में थे और चीन तथा पश्चिमी व जापानी व्यापारियों के बीच मध्यस्थता का कार्य करते। शंघाई एक ऐसा क्षेत्र था जहां चीनी पूँजीपति में विदेशी व्यापारिक स्वार्थों के साथ अधिक संपर्क में आये तथा दूसरी ओर दोनों में संघर्ष भी हुआ। 1905 तथा 1907 के बहिष्कार में राष्ट्रवादी भवनाएं अधिक स्पष्ट हुईं। उदाहरण के तौर पर, 1907 में शंघाई-निंगपो रेलवे निर्माण के लिए चीनी तथा ब्रिटिश कंपनियों के मध्य हुए समझौते के विरुद्ध कुलीनों व्यापारियों तथा कुलियों के प्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से विरोध प्रकट किया। पश्चिमी विरोध के ये वर्ष चीनी साम्राज्य के विरुध शत्रुता में रूपांतरित हो गये क्योंकि चीनी सरकार चीन तथा चीन के व्यापारिक हितों की रक्षा करने में असमर्थ रही।

ऐसे अन्य कई सामाजिक समूह थे जिनका उद्भव चिंग एवं साम्राज्यिक व्यवस्था के विरुद्ध शक्तिशाली शत्रुओं के रूप में हुआ। 20वीं सदी के प्रारंभिक दशक में युवकों को सैनिक जीवन अपनाने के लिए उत्साहित किया गया। बहुत से विद्यार्थियों ने देश की बेहतर सेवा करने के लिए "अपने लेखनी का परित्याग कर तलवार को ग्रहण कर लिया।" मिलिट्री अकादमियों के स्नातक एवं नये स्कूल कन्फ्यूशियसवादी विचारधारा से दूर होते जा रहे थे। वे ऐसे उद्देश्य से प्रेरित थे जिसके द्वारा न केवल चीन को बचाना चाहते थे अपितु वे एक ऐसे नये एवं मजबूत चीन का निर्माण करना चाहते थे जो पश्चिमी तथा जापानी दोनों प्रकार के साम्राज्यवाद की चुनौतियों का सामना कर सके। जहां एक ओर व्यापारियों, सैनिकों तथा विद्यार्थियों के बीच असंतोष बढ़ रहा था, ठीक इसके अनुरूप कृषकों के बीच भी असंतोष बढ़ा। यद्यपि इस समय किसानों के ताइपिंग एवं बॉक्सर जैसे विद्रोह नहीं हुए। यांगजी क्षेत्र के निचले तथा मध्य प्रान्तों में लगातार इस तरह के दंगे होते रहते। गुप्त संस्थाएं जो सामान्यत: वंशीय पतन के दौरान उभर कर सामने आती थीं एक बार फिर सक्रिय हो उठीं।

वह ग्रामीण प्रबुद्ध वर्ग जिसे शक्ति के क्षेत्रीयकरण से मुख्य रूप से लाभ मिला था अब वह हर कीमत पर अपने हितों की सुरक्षा करने को उत्सुक था। विदेशी शक्तियों के आर्थिक साम्राज्यवाद के चारों ओर फैल जाने से, उन्होंने इसे अपने आर्थिक हितों के लिए खतरा समझा। चिंग के द्वारा उनके हितों की सुरक्षा न कर पाने के कारण वे बहुत क्रोध में थे। 19वीं सदी के अंत तक ग्रामीण संपन्न वर्ग के मज़बूत व्यापारिक हित विकसित हो चुके थे। व्यापारियों एवं जमींदारों के बीच अब मजबूत संबंधों का बढ़ता रुझान था (अब उन दोनों के बीच एक मजबूत समूह बन गया जिसको शेन-शांग कहा जाता था)।

खान तथा रेलवे में छूट के लिए किये गये आंदोलन से स्पष्ट है कि शेन-शांग ने विदेशी

प्रतियोगिता एवं घुसपैठ को रोकने और राज्य के विरुद्ध अपने आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकारों को बढ़ाने का दृढ़ निश्चय किया। अपने इस प्रयास में वे अक्सर बड़े नौकरशाहों का भी समर्थन करते। उदाहरण के लिए 1890 में चीन के एक बड़े अधिकारी झांग-झी-डोंग (1837-1909) ने एक अमेरीकी कंपनी से हानको-कैन्टन रेलवे निर्माण के अधिकारों को वापस खरीद लिया। उसको हुबई हुनान तथा कुआतिंग के कुलीनों का सक्रिय समर्थन प्राप्त था। 1911 में चिंग के द्वारा रेलवे के राष्ट्रीयकरण के प्रस्ताव के प्रति प्रांतीय शैन-शांग ने शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया। लेकिन चिंग की इस घोषणा का दूसरा पक्ष यह था कि उसने विदेशी बैंक सिंडीकेट से विशाल ऋण प्राप्त करने के लिए समझौता किया था और इस कार्यवाही को चीनी राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध विश्वासघात समझा गया। शैन-शांग ने इसको उनकी देशभक्ति, प्रांतीय स्वायत्तता तथा आर्थिक सम्पन्नता के लिए एक खतरे एवं अपमान के रूप में लिया। सिच्वान प्रांत में रेलवे की रक्षा करना एक तरह से क्रांति को आमंत्रित करना बन गया। इसका आगे विवेचन किया जाएगा किन्तु पहले हमें चीनी राष्ट्रवाद के विकास पर प्रकाश डालने की आवश्यकता है।

17.5 चीनी राष्ट्रवाद का विकास

20वीं सदी के प्रारंभ में चीनी राष्ट्रवाद ने अधिक सुनिश्चित स्वरूप को ग्रहण कर लिया था। अब वह मुख्य रूप से मांचू विरोधी एवं साम्राज्यवाद विरोधी मुद्दों पर केन्द्रित था।

मांचू वंश 1644 में सत्ता में आया तथा उसने स्वयं को अलग समूह में रखते हुए अपनी विशेष पहचान को बनाये रखा। लेकिन उनके इस अलगाववाद से किसी भी तरह से चीन के अस्तित्व को खतरा पैदा नहीं हुआ। उनकी अपनी मात्रभूमि मंचूरिया पर आप्रवासियों को बसने का आज्ञा नहीं थी। नागरिक एवं सैनिक प्रशासन में मांचुओं के लिए पदों को सुरक्षित कर दिया गया था। मांचू-प्रभुत्व को एक सामाजिक परंपरा के द्वारा लागू किया गया। इस सामाजिक परंपरा के तहत चीनियों को सर पर एक लंबी चोटी रखना पड़ता था। एक ऐसी लंबी चोटी जिसको 20वीं सदी के प्रथम दशक में मांचू प्रभुत्व तथा उनके अंतर्गत चीनी अधीनता के प्रतीक के तौर पर देखा जाने लगा। इन सभी के बावजूद मांचू काफी लचीले थे। उन्होंने चीन की सामाजिक एवं राजनीतिक परंपरा तथा कन्फ्यूशियसवाद को अपना लिया था। इन्होंने नौकरशाही के समर्थन तथा प्रांतीय कुलीनों के मौन समर्थन से शासन किया। यही वह समर्थन था जो कई कारणों से कमजोर पड़ गया था और जिनको पहले ही उद्धृत किया जा चुका है।

मांचू विरोधी भावनाएं जीवित थीं और उन्हें लंबे समय तक गुप्त संस्थाओं द्वारा बनाये रखा गया। बॉक्सर आंदोलन के प्रारंभ में शक्तिशाली मांचू विरोधी तत्व विद्यमान थे। मांचू विरोध धीरे-धीरे जनसंख्या के विशाल हिस्से में फैल गया। चीनी बुद्धिजीवियों में यह विरोध सम्राट की निरंकुश शक्तियों की निंदा करने के साथ फैला।

इसी के साथ 19वीं सदी के दौरान समय-समय पर चीनी अधिकारियों एवं किसानों के द्वारा विदेश विरोधी भावनायें अभिव्यक्त की गई। 20वीं सदी के प्रथम दशक में विदेशी व्यापार एवं वाणिज्य पर सीधे-सीधे हमले किये गये। अमेरिका के अप्रवास संबंधी कानूनों के विरोध में 1905 में चीनी सौदागरों तथा व्यापारियों ने शंघाई में अमेरिकी सामान का बहिष्कार किया। अमेरिका के अप्रवास संबंधी कानून चीनियों के विरुद्ध पक्षपातपूर्ण थे। इस बहिष्कार आंदोलन में विद्यार्थी एवं जनता ने भारी संख्या में भाग लिया। इस राजनीतिक बहिष्कार की मुख्य विशेषता यह थी कि अब चीनी मात्र अपने आर्थिक विशेषाधिकारों के हनन का विरोध नहीं कर रहे थे अपितु राष्ट्र के प्रति वफादार एवं आत्म चेतना का प्रदर्शन भी कर रहे थे। ठीक इसी तरह के बहिष्कार का आयोजन 1908 में जापानी सामान के विरुद्ध किया गया। अवैध सामग्री ले जाते हुए तातसू मारू नाम के जापानी जहाज पर चीनियों ने अधिकार कर लिया। जापानियों ने इसका प्रबल विरोध किया तथा माफी एवं क्षतिपूर्ति की मांग की। इसने चीनियों के क्रोध को और उग्र कर दिया तथा उन्होंने जापानी सामान के बहिष्कार को संगठित किया। व्यापारियों ने जापान के सामान के गोदामों को जला डाला तथा गोदी मजदूरों ने जापानी जहाजों को खाली करने से इंकार कर दिया।

इन बहिष्कारों से स्पष्ट है कि साम्राज्यवाद का विरोध तथा चीन की संप्रभुता की रक्षा के प्रति दृढ़ संकल्प बढ़ रहा था। लेकिन साम्राज्यवाद का बढ़ता यह विरोध किसी भी तरह से विरोधाभासों से मुक्त न था। जैसे मांचू विरोधी राष्ट्रवाद का विकास हो रहा था वैसे-वैसे

सन-यात-सेन जैसे राजनीतिक आंदोलनों के नेतागण चिंग की सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए साम्राज्यवादी शक्तियों की सहायता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत भी थे। इसके फलस्वरूप इस स्थिति में एक सुस्पष्ट साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन विकसित न हो सका। लेकिन चीनी राष्ट्रवाद की बढ़ती चेतना चीनी समाज के बहुत से वर्गों के बीच एक आबद्ध शक्ति बन गई।

17.5.1 सुधारवादी एवं क्रांतिकारी

20वीं सदी के प्रारंभ तक चीन की आबादी का एक बड़ा भाग यह मानने लगा था कि चीन को बचाने के लिए कुछ व्यापक परिवर्तन करना अपरिहार्य हो गया था। जबकि सभी समूह राष्ट्रवाद एवं समर्पण की अवधारणाओं से प्रेरित थे लेकिन चीन में सरकार का स्वरूप कैसा होगा इसको लेकर दो बड़े-बड़े किंतु अलग-अलग रुझान प्रकट हुए।

प्रथम वह समूह जो स्वयं को सुधारवादी कहता था और परिवर्तन को धीरे-धीरे करने तथा संवैधानिक राजतंत्र की वकालत करता था। दूसरा वह समूह था जो अक्सर स्वयं को क्रांतिकारी के रूप में उद्धृत करता था उसने ऐसे राजनीतिक परिवर्तन को प्रचारित किया जिसके अंतर्गत मांचुओं एवं साम्राज्यिक राजतंत्रीय व्यवस्था की किसी भी स्थिति में कोई भूमिका न होगी।

1911 की क्रांति का नेतृत्व इन क्रांतिकारियों के हाथों में केन्द्रित हो गया था और जिसने अंततः चिंग तथा साम्राज्यिक व्यवस्था को धराशायी कर दिया।

17.5.2 सुधारवादी

लियांग दि-चाओ सुधारवादियों में सबसे महत्वपूर्ण था और वह कांग-यू-वी का घनिष्टतम सहयोगी एवं शिष्य था। लियांग का जन्म 1873 में कैंटन में हुआ था तथा उसने चीनी शिक्षा प्राप्त की। 1898 के सुधार आंदोलन की असफलता के बाद लियांग कांग के साथ जापान भाग गया। लियांग एक बहुमुखी लेखक एवं निबंधकार था। लियांग का अपने समय की संपूर्ण चीनी युवा पीढ़ी पर व्यापक प्रभाव पड़ा था। यद्यपि लियांग तत्काल क्रांतिकारी राजनीतिक परिवर्तन में विश्वास नहीं करता था, वह अपने समकालीन और कहीं अधिक लोकप्रिय नेता सनयात-सेन से भिन्न था। लियांग ने युवकों का आह्वान करते हुए लिखा कि वे अपने अतीत को छोड़ते हुए उसी तरह से आगे की ओर अग्रसर हो जैसे "जहाज तट को छोड़कर बढ़ जाता है।"

लियांग क्रांतिकारी राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं अथवा सनयात सेन से सहमत नहीं था कि तत्काल क्रांतिकारी परिवर्तन संभव था या चीन इस मोड़ पर इस तरह के परिवर्तन के लिए तैयार था। सन् 1907 में लियांग ने झेंग वेन शी (राजनीतिक संस्कृति संगठन) की स्थापना की। इस संगठन के माध्यम से लियांग ने संविधान एक संसद, एक मंत्री परिषद, एक स्वतंत्र न्यायपालिका तथा प्रांतीय स्वायत्तता को अपनाने की वकालत की। लियांग जिस लोकतंत्र की स्थापना करना चाहता था उसका स्वरूप संवैधानिक राजतंत्र था और जिसे स्वयं चिंग के द्वारा स्थापित किया जाना था। सम्राट को एक "जागरूक राजतंत्र" के रूप में कार्य करना था जिसके अधीन जनता को अपने अधिकारों के अनुरूप कार्य करने के लिए राजनीतिक तौर पर शिक्षित किया जाना था। क्रांतिकारी राजनीतिक परिवर्तन का उसका विरोध उसके इस विचार पर आधारित था कि चीनी जनता इस तरह के परिवर्तन के लिए बिल्कुल भी तैयार न थी और वह एक उत्तरदायी एवं चेतन नागरिक की भूमिका करने के प्रति पूर्णतः अनभिज्ञ थी। कहने का तात्पर्य यह है कि वह संवैधानिक राजतंत्र के अंतर्गत एक संरक्षण की व्यवस्था का समर्थक था।

यद्यपि 1911 की क्रांति के पूर्व वर्षों में चीनी युवक एवं उग्रवादी यह विश्वास करते हुए लियांग से दूर हट रहे थे कि उसके विचार रूढ़िवादी थे। लेकिन इसके बावजूद लियांग के विचारों का चीनी समाज पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा। उसके विचारों ने उस संवैधानिक आंदोलन को प्रेरित किया जिसने चिंग के विरुद्ध कुलीन वर्ग को गतिशील बनाया। लेकिन कुलीन वर्ग भी लियांग के लोकतांत्रिक चीन के लक्ष्य के प्रति पर्याप्त समर्पित न था। उन्होंने उसके विचारों का प्रयोग चिंग के विरुद्ध अधिक राजनीतिक हिस्सेदारी एवं सत्ता को प्राप्त करने के उद्देश्य के लिए किया।

17.5.3 क्रांतिकारी

सन यात-सेन (1866-1925) के अधिक मूलगामी राजनीतिक परिवर्तन की प्रवृत्ति के

प्रतिनिधि के रूप में देखा गया है। सन यात-सेन ने न केवल चिंग को उखाड़ फेंकने की मांग की अपितु वह साम्राज्यिक संस्थाओं की समाप्ति का भी पक्षधर था। उसके गणतंत्र के स्वरूप में एक नये राजनीतिक तंत्र के निर्माण की वकालत की।

लियांग की भांति ही सन यात-सेन का जन्म कुआतांग प्रान्त के एक धनी कृषक परिवार में हुआ था। लियांग की भांति उसको बुनियादी चीनी शिक्षा नहीं प्राप्त हुई। उसने होने लूलू तथा हांगकांग में शिक्षा प्राप्त कर पश्चिमी विधि में डाक्टर के प्रशिक्षण को प्राप्त किया। वह ताइपिंग विद्रोह एवं गुप्त संस्थाओं का प्रबल समर्थक था। उसने 1895 में चिंग के विरुद्ध एक विद्रोह को संगठित करने का प्रयास किया। किन्तु यह असफल रहा। उसने झिंग झोंग हुई (रिवाइव चाइना सोसाइटी) को गठित किया।

उसके पश्चिमी तौर-तरीके तथा वंशवाद विरोधी विचार चीनी युवकों के बीच गुप्त संस्थाओं तथा विदेशों में चीनी समुदायों के बीच बहुत लोकप्रिय हुए। विदेशों में स्थित चीनी समुदाय उसको चिंग विरोधी गतिविधियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे थे। 17वीं शताब्दी में मिंग वंश के पतन के समय से ही गुप्त संस्थाओं ने मांचूवाद-विरोधी एक परंपरा को बनाये रखा था। विदेशों में रहने वाले चीनी समुदायों ने समझा कि चिंग आधुनिक अर्थव्यवस्था के विकास को अवरुद्ध कर रहा था और इसलिए उनके वाणिज्यिकी हितों पर भी वह कुठाराघात कर रहा था। 19वीं सदी के अंत से ही चीनी युवक लगातार गैर चीनी विचारों में परिचित होते जा रहे थे। उन्होंने सन यात-सेन के आधुनिक राजनीतिक विचारों में चीन के जीवन दान की संभावनाओं को देखा।

बोध प्रश्न 2

1) चिंग शासन के प्रति शैन-शांग के दृष्टिकोण का उल्लेख पांच पंक्तियों में कीजिए।

....
....
....
....
....

2) लियांग दि-चाओ के विचारों का 10 पंक्तियों में विवेचन कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3) मांचुओं के विरुद्ध चीनी लोगों को संगठित करने में सन यात-सेन की भूमिका पर दस पंक्तियां लिखिए।

....
....
....
....
....
....

....

....

....

17.6 तोंग मेंग हुई का निर्माण और इसकी विचारधारा

1895 के विद्रोह के असफल हो जाने के बाद सन यात-सेन जापान भाग गया। वहां पर उसकी समान विचारों वाले बुद्धिजीवियों और गुप्त संस्थाओं के सदस्यों से भेंट हुई। 20वीं सदी के प्रथम दशक में इस तरह की बहुत सी संस्थायं थी और इनका उद्भव चिंग शासन को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से हुआ था। उदाहरण के लिये, देशभक्तिपूर्ण अध्ययन के लिए संस्था का प्रारंभ प्रत्यक्ष संघर्ष में लोगों को शामिल करने के लिए किया गया। शंघाई तथा हुनान जैसे अनेक स्थानों पर विद्रोह करने के प्रयास किये गये। 1903 में हुनान प्रांत में हुआ शिंग हुई (चीन की पुनरावलोकन संस्था) को हुआंग शिंग के नेतृत्व में विद्रोह करने के लिए संगठित किया गया। इन प्रयासों में से अधिकतर असफल हो गये और इनके नेतागण जापान भाग गये। उस समय जापान को इन सभी राजनीतिक "असंतुष्टों" के लिए सुरक्षित देश समझा जाता था।

जुलाई 1905 में इन असंतुष्ट नेताओं ने जापान में एक बैठक की। इस बैठक से ही **तोंग मेंग हुई** की उत्पत्ति हुई। **तोंग मेंग हुई** का निर्माण शिंग झोंग हुई (रिवाइव चायना सोसाइटी) **हुआ सिंग हुई** (चीन की पुनरावलोकन संस्था) तथा **गोंग फ्यू हुई** (पुनर्स्थापना संस्था) का विलय करके किया गया। तोंग मेंग हुई की स्थापना विभिन्न छोटे समूहों की दिशा में एक सुनिश्चित कदम, समान उद्देश्यों के साथ तत्काल एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए हुई थी। तोंग मेंग हुई के सदस्यगण भ्रातत्व की एक ऐसी शपथ से बंधे थे जो गुप्त संस्थाओं की परंपरा के अनुरूप थी। इस शपथ का एक उदाहरण है :

> मैं ईश्वर को साक्षी मानकर शपथ लेता हूं कि मांचू शासकों को निकालने, चीनी संप्रभुता को पुर्स्थापित करने, गंणतंत्र को स्थापित करने और भूमि अधिकारों को समान बनाने के लिए मैं अपने भरसक प्रयास करूंगा। मैं इन सिद्धांतों के प्रति वफादार रहने की शपथ लेता हूं · · ·।"

इस शपथ के अंतर्गत मांचुओं को सत्ताच्युत करना, उन संप्रभु अधिकारों को प्राप्त करना जिनका हरण चीन से विदेशी शक्तियों ने कर लिया था और गणतंत्र का निर्माण करना शामिल था। इन सभी उद्देश्यों में से मांचूवाद का विरोध मुख्य केन्द्र बन गया। मांचू-विरोध का सबसे अच्छा उदाहरण "क्रांतिकारी सेना" नामक लोकप्रिय पुस्तिका थी। इस पुस्तिका को उग्र राष्ट्रवादी एवं क्रांतिकारी जाओ रोंग के द्वारा लिखा गया था। उसने चीन वासियों का आहवान करते हुए लिखा। "· · · यदि चीन को स्वतंत्र होना है, यदि चीन को 20वीं सदी के नये विश्व में जीवित रहना है, तब पचास लाख लोगों की कर्कश मांचू जाति को उखाड फेंकना होगा।"

इस संयुक्त दल के निम्नलिखित मूलभूत लक्ष्य थे:

1) यह गणतंत्र की रचना एवं स्थापना के प्रति समर्पित था।
2) जिन विचारों ने इसकी कार्यवाहियों के आधार को प्रतिपादित किया वे सान मिन झू वी (जनता के तीन सिद्धांत) में निहित थे और इन सिद्धांतों का रचियता सन यात-सेन था। ये तीन सिद्धांत थे – राष्ट्रवाद, लोकतंत्र तथा समाजवाद।

सान मिन झू वी में प्रथम राष्ट्रवाद था। इसकी मुख्य विशेषता मांचू विरोधी स्पष्ट एवं समझौताविहीन दृष्टिकोण अपनाना था। यद्यपि इस तरह की नीति ग्रहण करने में साम्राज्यवाद विरोधी दृष्टिकोण भी निहित था। मांचुओं के प्रति घृणा अंततः शक्तिशाली साम्राज्यवाद विरोधी शक्तिशाली दृष्टिकोण में परिवर्तित हो गई। लोकतंत्र का अभिप्राय एक गणतंत्रीय संविधान तथा सभी नागरिकों के लिए समान अधिकारों सहित सरकार की स्थापना करना था। इसका अभिप्राय कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका को अलग-अलग करना था। वास्तव में यह परंपरागत साम्राज्यिक व्यवस्था से काफी हटकर था।

तीसरा लक्ष्य जनता की आम हालत को सुधारना था। यहां पर यह जानना आवश्यक है कि

सन यात-सेन के विचार हेनरी जॉर्ज से प्रभावित थे। हेनरी भूमि मूल्यों में समुचित वृद्धि के लिए एक ही कर का पक्षधर था। इस तरह से वह तेजी से होते औद्योगिकरण एवं नगरीय समाज में सट्टाबाजों एवं एकाधिकारवादियों की अधिक संपन्नता पर रोक लगाना चाहता था। जहां एक ओर इसका उद्देश्य सामान्य माल के प्रचलित सिद्धांत के प्रति समर्पण था वहीं इसका लक्ष्य औद्योगिकरण तथा नगरीकरण के द्वारा उत्पन्न भूमि मूल्यों में सट्टेबाजी पर नियंत्रण करना भी था। लेकिन तोंग मेंग हुई के कथित इन सिद्धांतों के साथ बहुत सी समस्यायें भी थीं। चीनी राष्ट्रवाद पर बहुत अधिक अनावश्यक बल देने का तात्पर्य था मांचुओं को बाहर निकाल देना। लेकिन पिछली तीन सदियों से मांचुओं का काफी चीनीकरण हो चुका था। इस नीति के कारण पश्चिम तथा जापान जैसे साम्राज्यवादी शक्तियों की उपस्थिति जैसी अति उस गंभीर समस्या पर कम ध्यान दिया गया जिसका चीन सामना कर रहा था।

गणतंत्र की स्थापना के दूसरे सिद्धांत के लिए तैयार की जाने वाली मजबूत आधारशिला की आवश्यकता पर कम ही ध्यान दिया गया जबकि इसी आधारशिला पर गणतंत्र को विकसित होना था। जहां गणतंत्र की स्थापना का लक्ष्य था, वहीं सन यात-सेन लियांग की एक संरक्षणात्मक काल की वकालत भी करता था। इस दृष्टिकोण का उपयोग बाद में 1920 में सैनिक शासन को चिरस्थायी करने के लिए किया गया।

सबसे अधिक स्तब्ध एवं निराश कर देने वाला सिद्धांत जनता के जीवन-यापन का सिद्धांत (समाजवाद) था। इस सिद्धांत में आशा के विपरीत चीन की मूलभूत समस्या कृषि संकट तथा चीनी किसानों की दीन हालत को अनदेखा कर दिया गया। चीन की आबादी का विशाल भाग किसान के थे।

उद्घोषित लक्ष्यों में कमजोरी के बावजूद सन यात-सेन तथा तोंग मेंग हुई को व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ। सन यात-सेन के राजनीतिक लक्ष्य और उसके प्रति समर्पण की भावना की ओर आंदोलित छात्र काफी बड़ी संख्या में आकर्षित हुए। सन यात-सेन का मत था कि आधुनिक गणतंत्र की स्थापना को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है और इस तरह से चीन की अर्धदासता की स्थिति को समाप्त कर दिया जाएगा। लियांग के आर्थिक क्रमिक परिवर्तन के विचार संभवतः पुराने हो गये प्रतीत होते थे और समय की मांग के अनुरूप रह पाये थे।

सन यात-सेन की भविष्यवादा तथा आशावादी राजनीति ने गणतंत्र स्थापना के लक्ष्य में कुछ बड़ी बाधाएं खड़ी कर दी थीं। चिंग साम्राज्य के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह को एक सामरिक नीति के तहत अनेक प्रांतों में क्रांतिकारी आधारों की स्थापना के लिए अपनाया गया था। 1908 से 1911 के बीच दक्षिण के क्वान तुंग तथा क्वांसी प्रांतों में इस तरह के विद्रोहों को करने के प्रयास किये गये। इन दोनों प्रांतों में गुप्त संस्थाएं सक्रिय थीं और ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि ये दोनों प्रांत हांग-कांग तथा इण्डो-चीन के समीप स्थित थे और वहां पर हथियारों की तस्करी संभव थी। लेकिन इस तरह के सभी प्रयास अन्य कई कारणों से असफल हुए। दोषपूर्ण संगठन, समन्वय का अभाव और इस तरह की चुनौतियों से प्रभावशाली ढंग से निपटने में राज्य की शक्ति को कम करके आंकना इनकी असफलता के कारण थे। राज्य ने उनका भयंकर तरह से दमन किया। इसके साथ-साथ अन्य समस्यायें भी थीं। तोंग मेंग हुई के अंदर भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों का उदय हो चुका था। दल के कुछ सदस्यों में अराजकतावादी विचार पैदा हो गये और वे सन यात-सेन के नेतृत्व पर प्रश्न चिन्ह लगाने लगे।

वह दिन अब दूर न था जब कि इन उग्रवादी गतिविधियों में असंतुष्ट कुलीन एवं निराश अधिकारीगण सम्मिलित होने वाले थे।

17.7 1911 की क्रांति

सन यात-सेन तथा उसके दल का कार्यक्षेत्र दक्षिणी प्रांतों में केन्द्रित था। 1911 की गर्मियों में चांगजी नदी के संग्रहण क्षेत्र में विद्रोह फूट पड़ा और इस विद्रोह ने क्रांति की शक्तियों की गति को और तेज कर दिया। दो ऐसी बड़ी घटनायें हुई जिनके कारण चिंग शासन तुरंत धराशाई हो गया – प्रथम घटना सिच्वान प्रांत में रेलवे अधिकारों के प्राप्त करने के आंदोलन के रूप में घटित हुई और दूसरी घटना वुचंग सेना का विद्रोह थी।

17.7.1 सिच्वान रेलवे की रक्षा

सिच्वान रेलवे की रक्षा के आंदोलन का प्रारंभ मई 1911 में हुआ था और इससे क्रांति की

शुरुआत हुई। 9 मई 1911 को चिंग ने सारी रेलवे के राष्ट्रीयकरण की घोषणा की। इस घोषणा के साथ चिंग के द्वारा 60,000 पौंड स्टरलिंग का विदेशी ऋण प्राप्त करने का भी निर्णय लिया गया। इस घोषणा तथा ऋण को प्रांतीय कुलीनों ने इसका प्रमाण माना कि चिंग चीनी उद्योगों की सहायता करने में कोई रुचि न रखता था।

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि प्रांतीय कुलीनों ने अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण के द्वारा अपने आर्थिक हितों को विकसित कर लिया था और रेलवे जैसे निर्माण कार्यों में विशाल धनराशि का निवेश भी कर चुके थे। 1904 में सिच्वान, हांगकुओ प्रांतीय रेलवे कंपनी का निर्माण किया गया। रेलवे निर्माण का कार्य प्रारंभ हो चुका था। कपनी ने भूमि पर कर लगाकर एवं स्वतः योगदानों के द्वारा लगभग एक करोड़ 60 लाख तायल को एकत्रित कर लिया था। इस तरह से कंपनी में बहुत से लोगों के हित निहित थे और राज्य ने जिस मुआवज़े की राशि को देने की पेशकश की, वह अपर्याप्त थी।

राष्ट्रीयकरण का विरोध बहुत से समूहों ने अन्य कई कारणों से किया। देशभक्त लोग विदेशियों पर वित्तीय निर्भरता के कारण नाराज़ थे। वित्तीय सहायता देने वालों एवं कुलीनों के हितों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा था और वे इसी कारण से आंदोलन में सबसे आगे थे। प्रांतीय सभा ने, जिसकी स्थापना चिंग द्वारा लागू किए गए संवैधानिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप हुई थी, रेलवे के राष्ट्रीयकरण को न केवल प्रांतीय आर्थिक स्वतंत्रता के लिए खतरा समझा अपितु इसको उन्होंने प्रांतीय राजनीतिक स्वायत्ता के लिए भी खतरा माना।

एक रेलवे सुरक्षा लीग (बौलूतोंग-झीहुई) की स्थापना प्रांतीय सभा एवं कुलीनों की मदद से की गई। याचिकाओं को वितरित किया गया और प्रदर्शनों का आयोजन हुआ। जब इन गतिविधियों का कोई प्रभाव न हुआ, शेयरहोल्डरों की एक बैठक 24 अगस्त 1911 को प्रांतीय राजधानी चेंगदू में संपन्न हुई। इस बैठक में विरोध को तीव्र करने का निर्णय लिया गया, जिसके अंतर्गत स्कूलों और दुकानों को बंद करना, कर न अदा करना तथा किसी भी आपातस्थिति का सामना करने के लिए स्वयंसेवी लड़ाकू जत्थों का गठन करना शामिल था।

जिसका प्रारंभ कुलीनों के हितों की रक्षा के लिए हुआ अब उसने नई दिशा ले ली थी। रेलवे सुरक्षा लीग में संविधानवादी भी शामिल थे और वे अपने विशेषाधिकारों को सुरक्षित करना चाहते थे। अब नई सामाजिक शक्तियां भी संघर्ष में प्रवेश कर गईं। गुप्त संस्थाएं गेलोहुई (भाइयों एवं बड़ों की संस्था) ने विद्रोही कृषकों के गुटों का समर्थन किया और इन कृषक गुटों में वे विद्यार्थीगण भी सम्मिलित हो गए, जो जापान से वापस आए थे।

सरकार ने सिच्वान की घटनाओं से चिंतित होकर नई सेना को सिच्वान की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया, लेकिन सरकार की इस कार्यवाही से संकट और गहरा हो गया। इसी समय सिच्वान की इन घटनाओं पर वूचंग में स्थित सेना की छावनी में फूट पड़े विद्रोह की प्रतिछाया पड़ी।

17.7.2 वूचंग विद्रोह

10 अक्तूबर, 1911 को जिस क्रांति का प्रारंभ हुआ था, उसको परम्परागत रूप से डबल डेन (Double Ten) के उभार के रूप में जाना गया है और इसी को 1911 की क्रांति का प्रारंभ भी माना गया है। यद्यपि इस क्रांति के मूल कारण इससे पूर्व घटित होने वाली अनेक जटिल घटनाओं में थे किन्तु वूचंग छावनी में सेना विद्रोह इस क्रांति के पथ में एक महत्वपूर्ण निर्णायक कदम साबित हुआ।

यह क्रांति नई सेना के सदस्यों का कार्य था। सेना के इन सदस्यों का साहित्यिक अध्ययन संस्था (वेनेक्से शी) के साथ संपर्क था और इनका संपर्क हूनान, हूबई तथा सिच्वान के क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों के साथ हो गया और उन्होंने गोंगजिंग हुई (सार्वजनिक प्रगति वाली एसोसिएशन) की स्थापना की। बाद में इस संस्था का संपर्क तोंग मेंग हुई के साथ हो गया, और इसने साहित्यिक अध्ययन संस्था के साथ घनिष्ट तौर पर कार्य किया। इन दोनों संस्थाओं ने अक्तूबर 1911 की क्रांति के लिए साथ मिलकर गुप्त तैयारियां शुरू कर दी थीं।

कॉमन एडवांसमेंट एसोसिएशन के कार्यालय में अचानक एक बम फटा। क्रांतिकारियों ने पुलिस कार्यवाही को रोकने के लिए सक्रिय कार्य करने की योजना बनायी। 10 अक्तबर 1911 की शाम को नई सेना की चार बटालियनों ने विद्रोह किया। उन्होंने शस्त्र भंडार पर अधिकार कर लिया तथा सरकारी भवनों पर आक्रमण किया। भय से गवर्नर रुई-चेंग तथा सेना के कप्तान ने नगर को छोड़ दिया। 11 अक्तूबर की सुबह तक वूचंग क्रांतिकारियों के

हाथों में आ गया। उनके पास कोई लोकप्रिय नेता न था। इसलिए उन्होंने ब्रिगेड कमांडर लि-युआन-होंग पर चीन की गणतंत्रीय सैनिक सरकार के प्रमुख पद को स्वीकार करने के लिए दबाव डाला और प्रांतीय सभा के अध्यक्ष तांग हुआ-लोंग को नागरिक मामलों की देखभल करने वाला मंत्री बना दिया गया। ये दोनों नेता उदार से लेकर रूढ़िवादी विचार रखते थे और अब उनके कंधों पर क्रांति प्रसार का कार्य था।

17.7.3 प्रांतों द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा

वुचंग के उदाहरण का अन्य प्रांतों ने भी तेजी के साथ अनुसरण किया और स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। अक्तूबर के महीने में ही हुबई, हुनान युआन, शैन्क्सि और शाक्सी प्रांतों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। नवम्बर के दौरान जियांगसी, जियागसू, झे जयांग, फूजियार, सिच्वान ने स्वतंत्रता की घोषणा का अनुसरण किया। 27 नवम्बर 1911 तक चिंग के नियंत्रण में मात्र मंचूरिया, हेनान, झिली तथा शातुंग थे।

जिन सामाजिक शक्तियों ने इन प्रांतीय स्वतंत्रता की घोषणाओं को किया था – वे एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न-भिन्न थी। गुप्त संस्थाओं तथा नयी सेना ने इन गतिविधियों में सक्रिय भूमिका अदा की थी। अधिकतर प्रांतों में नेतृत्व प्रांतीय सभाओं एवं चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स के हाथों में था। प्रांतीय अधिकारीगण या तो भाग चुके थे या फिर कुछ स्थानों पर वे क्रांतिकारियों के साथ हो गये थे। उदाहरण के लिए कुओं तांग तथा जियागली जैसे प्रांतों के गवर्नरों ने स्वयं ही सत्ता पलट की घोषणा कर दी थी। सामान्य तौर पर यह शांतिपूर्ण हस्तांतरण था।

17.7.4 चिंग द्वारा जवाबी कार्यवाही

चिंग सरकार ने बियांग सेना की 12 यूनिटों को लेकर जवाबी कार्यवाही की। लेकिन समस्या यह थी कि सेनायें कमांडर युआन शि-काई के प्रति वफादार थीं और उसको विद्रोहियों को दबाने के लिए सेवा निवृत्ति से वापस बुलाया गया। जाय-फेंग की सेना को युआन की सभी शर्तों को स्वीकार करना पड़ा। युआन ने इस अवसर का उपयोग अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए किया तथा इसी के साथ-साथ उसे विद्रोहियों की सहानुभूति भी प्राप्त हुई। उसने विद्रोहियों के लिए क्षमादान तथा संसद की स्थापना की मांग की। 27 अक्तूबर को राष्ट्रीय सभा के सदस्य भी संविधान निर्माण करने, संसद का अधिवेशन बुलाने तथा माफी घोषित करने की मांग कर चुके थे। स्वयं बियांग सेना की ओर से विद्रोह के भय से चिंग ने 19 धाराओं के संविधान की घोषणा की और साम्राज्यिक सेना के सेनापति युआन शि-काई को प्रधान मंत्री बना दिया गया।

युआन शि-काई ने तेजी से प्रति आक्रमण की कार्यवाही की और हांको तथा हायांग पर अधिकार कर लिया। इस आक्रामक कार्यवाही को इस स्तर पर रोक दिया गया। यह सुझाव दिया गया कि युआन ने ऐसा इसलिए किया कि वह अपनी स्वयं की अभिलाषाओं को पूर्ण करना चाहता था। विद्रोही भी पर्याप्त रूप से शक्तिशाली थे। अतः उसने पहली दिसम्बर 1911 को उनके साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। विदेशी शक्तियों ने तटस्था की नीति का अनुसरण किया। ऐसा इसलिए हुआ कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रांतिकारियों ने कोई कार्यवाही नहीं की और नये नेतागण उनके हितों के साथ समझौता करने की इच्छा रखते थे और उनके मूक समर्थन को प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे।

17.7.5 चीनी गणतंत्र

जिस समय क्रांति का प्रारंभ हुआ उस समय सन यात-सेन अमेरिका में था। उस समय एक ओर क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों में और दूसरी ओर कुलीनों एवं सैनिकों के बीच मतभेद थे। लगातार बहुत सी प्रांतीय बैठकों के बाद यह निश्चय किया गया कि चीन में राष्ट्रपति प्रणाली की सरकार होगी और सन यात-सेन को एक मत से प्रथम राष्ट्रपति चुना गया। चीनी गणतंत्र का उद्घाटन 1 जनवरी 1912 को नानकिंग में किया गया।

नये गणतंत्र को युआन शि-काई तथा उसकी सेना से बहुत खतरा था। इस स्थिति में इस संकट को टालने और इस अनुभवहीन गणतंत्र को बचाने के लिए सन यात-सेन ने युआन के पक्ष में त्यागपत्र देने की पेशकश इस शर्त के साथ की कि यदि वह नये गणतंत्र का समर्थन करे।

युआन ने नानकिंग सरकार के साथ बात चीत की और अंतिम मांचू सम्राट को

योजना बनायी। 12 फ़रवरी 1912 को सम्राट श्वान-तोंग (बाद में हेनरी पू यी के नाम से जाना गया) ने "जनता की इच्छाओं में निहित वर्ग के निर्णय" के आगे समर्पण कर दिया और उसने सम्राट के पद का त्याग कर दिया। इस तरह से चिंग वंश और चीन के प्राचीन राजतंत्र का अंत हो गया। अंतिम शाही घोषणा के द्वारा युआन की स्थिति को सुरक्षित करते हुए कहा गया "युआन को एक अस्थायी गणतंत्रीय सरकार को पूरी शक्ति के साथ संगठित करने दिया जाये और एकता के साधनों के तौर पर गणतंत्रीय सेना को प्रदान कर दिया जाये जिसमें जनता के लिए शांतिपूर्ण वातावरण तैयार हो सके। 10 मार्च 1912 को युआन ने संसद का निर्वाचन तथा एक पूर्ण रूपेण सवैधानिक सरकार की स्थापना होने तक अस्थाई राष्ट्रपति के तौर पर कार्य किया।

17.8 परिणाम

यद्यपि मांचू शासन का अंत अपेक्षाकृत सरलता से हो गया था किन्तु क्रांति की मूलभूत कमजोरियां भी स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ने लगीं। युआन राष्ट्रपति था किन्तु वह प्रतिनिधि सरकार के प्रति समर्पित न था और उसने प्रत्येक अवसर का प्रयोग संसदात्मक प्रक्रिया को उलटने के लिए किया। जिस किसी ने उसकी शक्ति को चुनौती दी, उसने इसे सहन नहीं किया।

क्रांति के तुरंत बाद राजनीतिक गुटों ने स्वयं को राजनीतिक दलों के रूप में संगठित किया और वे स्वयं को संसदात्मक चुनावों के लिए तैयार करने लगे। चीनी गणतंत्र में 1913 में प्रथम संसदात्मक चुनाव हुए। इन चुनावों में तीन दलों में कुओ मिंग तांग (Kuo Min Tang) को सबसे अधिक सफलता प्राप्त हुई। लेकिन यह प्रक्रिया बहुत लम्बे समय तक बनी न रह सकी। युआन ने तेजी के साथ कार्यवाही करते हुए क्रांतिकारियों के विरुद्ध दमनात्मक कार्यवाही की और मार्च 1913 में सोंग जिओ-रेन को शंघाई में इस आशय के साथ फांसी दे दी गई जिससे कि उसकी लोकप्रियता से पैदा होने वाले खतरे को रोका जा सके।

सोंग की इस हत्या ने चीनियों को उत्तेजित कर दिया। युआन ने विपरीत शर्तों पर विदेशी ऋण लिया और इसके कारण भी उसकी कटु आलोचना हुई। युआन ने 2 करोड़ 50 लाख पौण्ड के मूल्य का ऋण ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, रूस, अमेरिका और जापान के बैंकों से प्राप्त किया। इसके बदले में उन्होंने एकमत मांग की और उन्होंने ऋणों पर एकाधिकार तथा गारंटी के तौर पर नमक करों को प्राप्त किया।

युआन के कड़े नियंत्रण के विरुद्ध जुलाई और अगस्त 1913 में कुछ प्रांतीय सरकारों ने स्वायत्तता प्राप्त करने के प्रयास किये। इन प्रांतीय सरकारों ने बिना किसी तैयारी के युआन सरकार से अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी तथा इसको संक्षिप्त जीवन वाली दूसरी क्रांति कहा गया। इस क्रांति का शीघ्रता से दमन कर दिया गया। सन यात-सेन, हुआंग शिंग तथा दूसरे नेता अपनी भविष्य की नीति को तय करने के लिये जापान भाग गये। बियांग सेना के सेनापतियों ने प्रांतों के गवर्नरों के तौर पर अपने नियंत्रण को और बढ़ा दिया। विरोध की अंतिम किरण को भी समाप्त कर दिया गया। युआन ने सभी शक्तियों को स्वयं में केंद्रित करने के लिये सभी साधनों का उपयोग किया और संसदात्मक सभा अर्थहीन हो गई।

इस तरह से क्रांति का काल संक्षिप्त रहा। इसने राजतंत्रीय गणतंत्र की स्थापना की। इस गणतंत्र की आधारशिलायें काफी कमजोर थीं। कुलीन तथा सेना जैसी जिन सामाजिक शक्तियों ने इस क्रांति को सम्पन्न किया उनके पास लम्बे समय के लिये देने को कुछ न था। क्रांतिकारी बुद्धिजीवी एक मजबूत सामाजिक आधार तथा सेना की सहायता के अभाव में प्रभावहीन बने रहे। इस क्रांति की सबसे महत्वपूर्ण कमजोरी यह थी कि इसने चीन की आबादी के मुख्य भाग कृषकों की पूर्ण अवहेलना की। यह क्रांति अपरिहार्य तौर पर समाज के प्रभुत्वशील गुटों के बीच संघर्ष थी। इस संघर्ष में केंद्रीय शक्तियों ने 1911 की क्रांति के मजबूत एकीकृत गणतंत्र के मूल लक्ष्य को कम करके आंका।

बोध प्रश्न 3

1) तोंग मेंग हुई के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को लगभग 10 पंक्तियों में बताइए।

....

....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) सिच्वान आंदोलन के कारणों पर पांच पंक्तियां लिखिए।

....
....
....
....
....

3) 1911 की क्रांति के परिणामों की 10 पंक्तियों में विवेचना कीजिये।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

17.9 सारांश

इस इकाई में हम देख चुके हैं कि चिंग सरकार ने नव जीवन प्राप्त करने के लिये किस तरह से सुधारों को प्रारंभ किया था। लेकिन ये सुधार जनता की अभिलाषाओं को सन्तुष्ट करने में असफल रहे। विदेशी शक्तियों की लगातार उपस्थिति तथा चीन की अर्थव्यवस्था एवं संसाधनों के शोषण के कारण चिंग की स्थिति और कमजोर हो गई। अब चीन में नवीन सामाजिक शक्तियों का उद्भव हुआ। उदित होते हुए पूंजीपति वर्ग ने चिंग पर आरोप लगाया कि वह उनके व्यापारिक हितों की रक्षा नहीं कर रहा है। अन्य दूसरे तत्कालिक कारणों ने राष्ट्रवादी भावनाओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। सुधारवादियों तथा क्रांतिकारियों दोनों ने एक साथ मिलकर जनता के बीच जागरूकता को पैदा किया। सुधारवादियों का नेतृत्व लियांग दी चाओ ने किया तो क्रांतिकारियों का सन यात-सेन ने। तोंग मेंग हुई के निर्माण ने क्रांतिकारी विचारों तथा संगठन को एक सुनिश्चित आकार प्रदान किया।

आपका परिचय क्रांति के दौरान घटित घटनाओं से भी कराया गया। ये घटनायें थीं – सिच्वान रेलवे की रक्षा का आंदोलन, वूचंग विद्रोह तथा प्रांतों के द्वारा घोषित स्वतंत्रता आदि गणतंत्र की स्थापना और इसके बाद जो कुछ घटित हुआ उससे भी आपको अवगत कराया गया है।

17.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें उपभाग 17.2.1.

2) देखें उपभाग 17.2.3.

बोध प्रश्न 2

1) व्यापारियों एवं भू-अभिजात वर्ग के बीच संबंध को शैन-शांग के रूप में उद्धृत किया गया है। उन्होंने चिंग का विरोध इसलिये किया कि वह साम्राज्यवादी शक्तियों के सम्मुख समर्पण कर रहा था। वे स्वयं के आर्थिक हितों की रक्षा करना चाहते थे। अपने उत्तर को भाग 17.4 के आधार पर लिखें।

2) देखें उपभाग 17.5.2.

3) देखें उपभाग 17.5.3.

बोध प्रश्न 3

1) देखें भाग 17.6. 2) देखें उपभाग 17.7.1. 3) देखें भाग 17.8.

मानचित्र – I
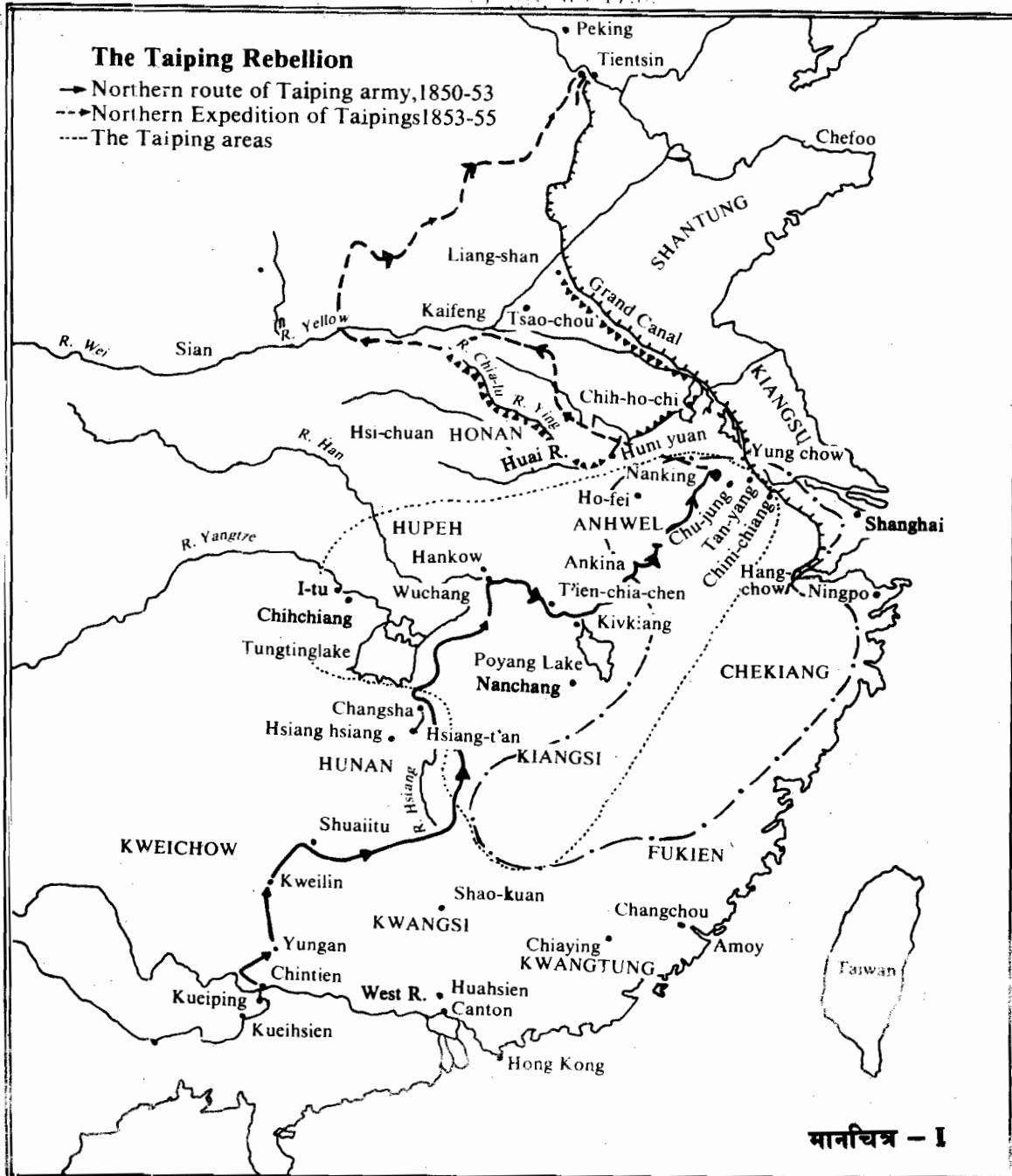
1) ताइपिंग नेता हुंग स्यू-चुआन की मूर्ति
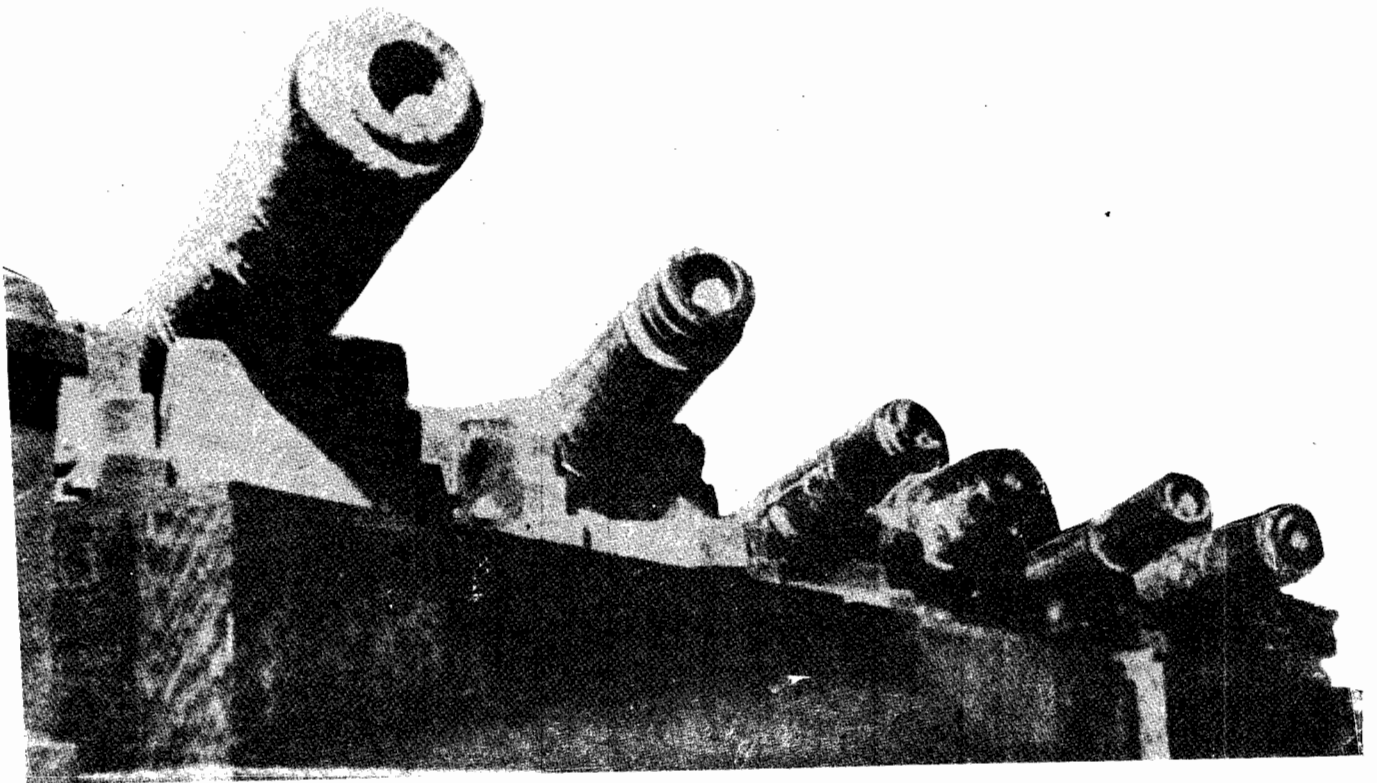
2) ताइपिंग द्वारा प्रयुक्त तोपें

3) *द हैवेनली लैंड सिस्टम* पुस्तक का अग्र-आवरण

4) ताइपिंग की *न्यू गाइड टू गवर्नमेन्ट* का अग्र-आवरण
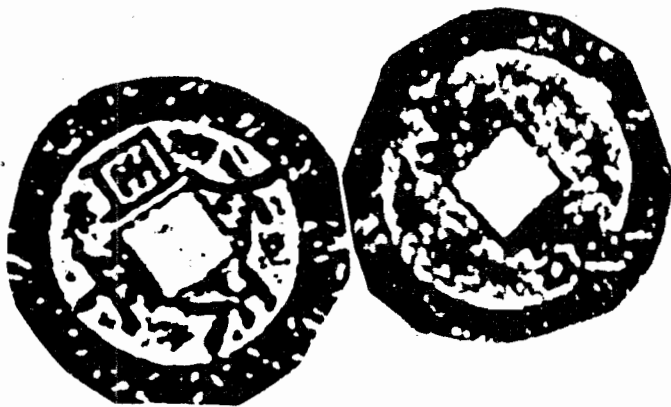
5) ताइपिंग सिक्के

6) ताइपिंग मुहर

7) ताईपिंग द्वारा प्रकाशित द *हेवेनली लैंड सिस्टम* और अन्य पुस्तकें

8) ताईपिंग का [illegible] थान विद्रोह

[illegible]圖有被迷壞心腸者亦欲跟隨他走所

時

救世主天兄基督統眾天使[illegible]

天父上主皇上帝[illegible]
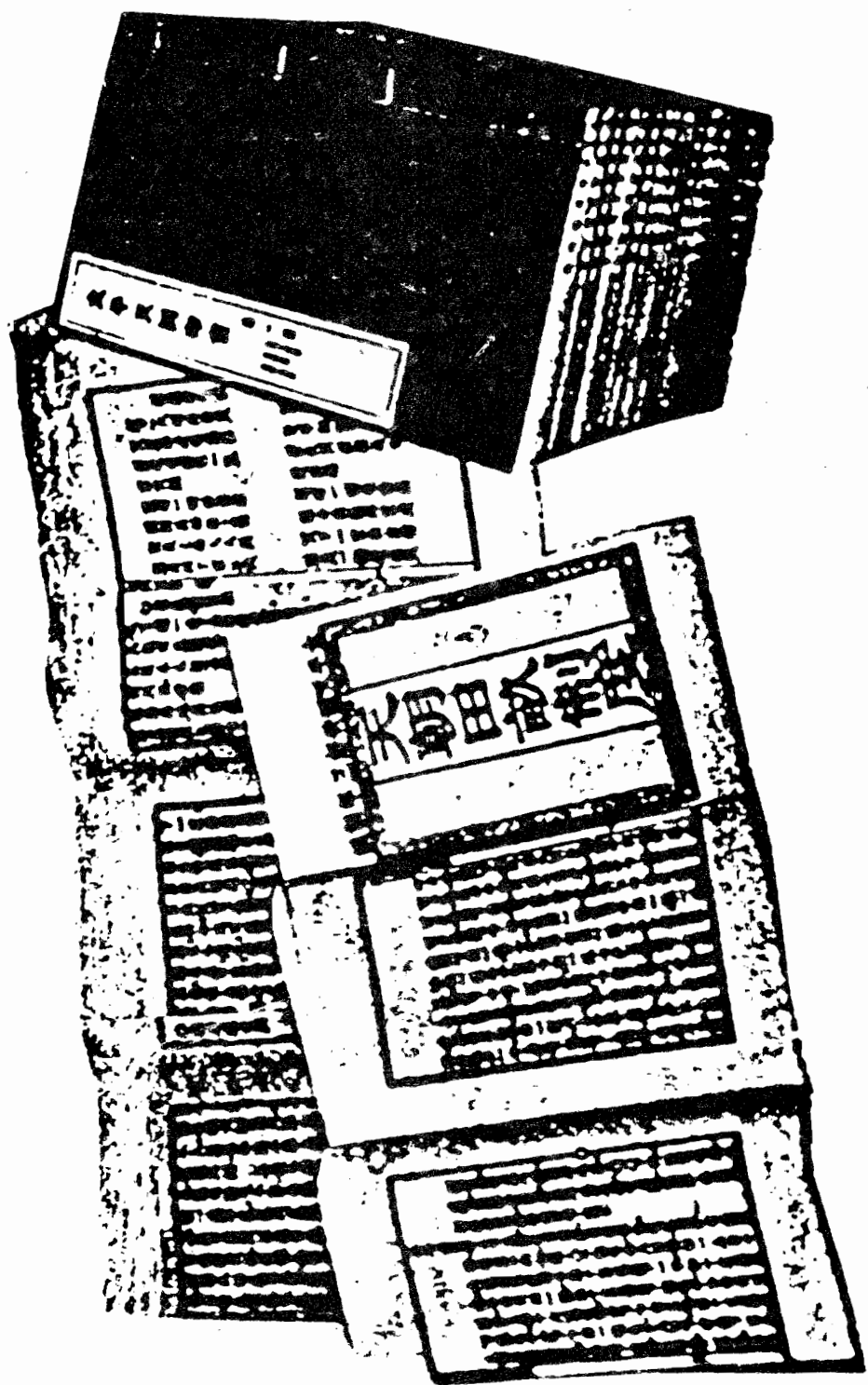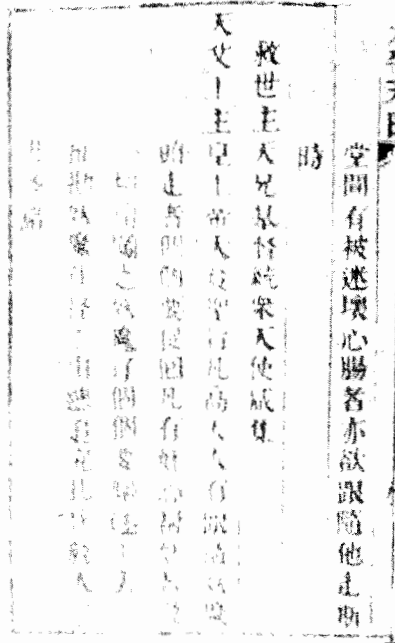
9) *ताइपिंग हैवेनली* डेज़ पुस्तक का एक पृष्ठ। इस पुस्तक में कनफ्यूशियस के विचारों को खण्डित किया गया है।
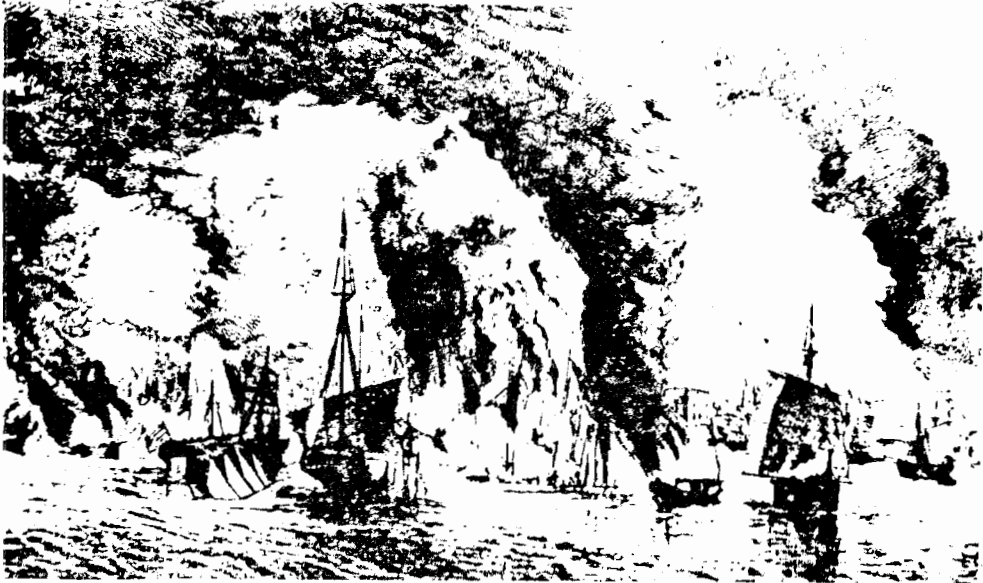
10) ताइपिंग द्वारा नानकिंग में चिंग युद्ध-पोतों पर दागी गई तोपें।
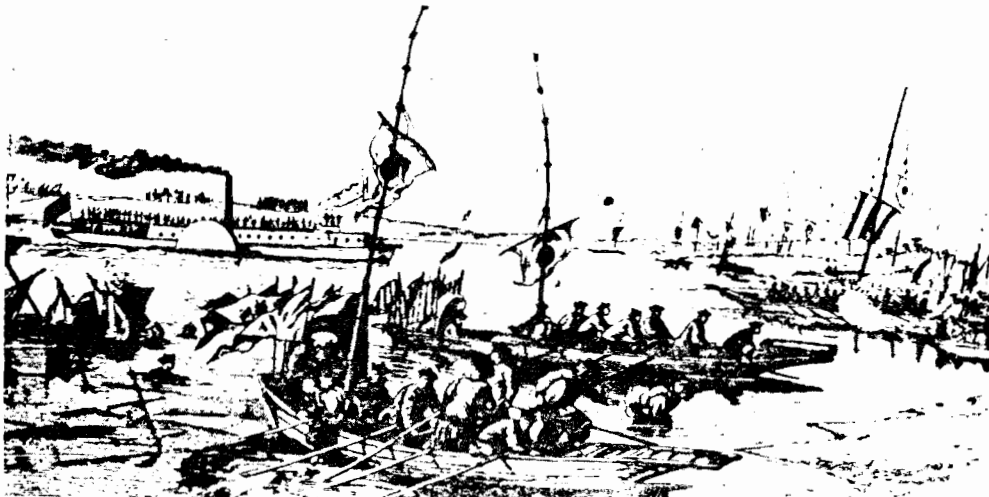
11) ताइपिंग सेना को विदेशियों द्वारा मदद

12) नानकिंग में ताइपिंग के विरुद्ध चिंग सेना का असफल धावा (1853)

13) माओ फू-तीएन – [illegible]क *यी हो तुआन* नेता
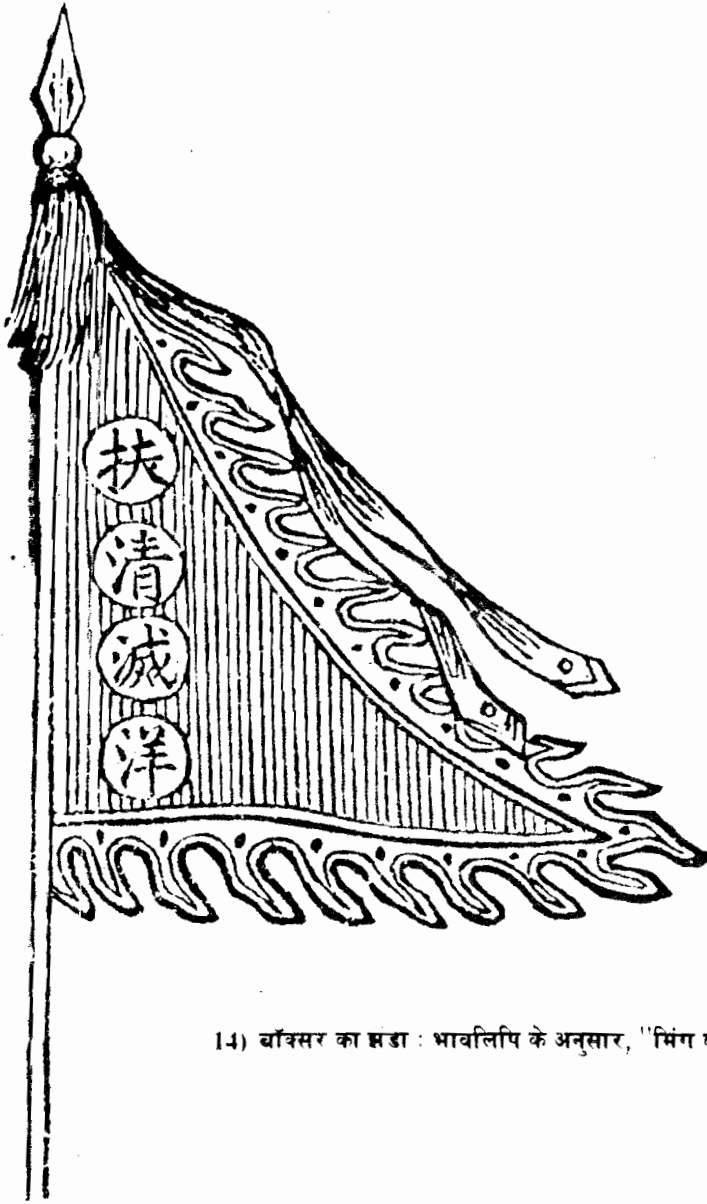
14) बॉक्सर का झंडा : भावलिपि के अनुसार, "मिंग की सहायता करो, चिंग को बेदखल करो"

15) बॉक्सरों द्वारा जलाया गया एक गिरिजाघर

16) बॉक्सरों से भागते हुए विदेशी

17) बॉक्सर का घोषणा-पत्र

18) यूरोपीय सेनाओं के विरुद्ध निआनसिन का युद्ध

19) राजकुमार कुंग
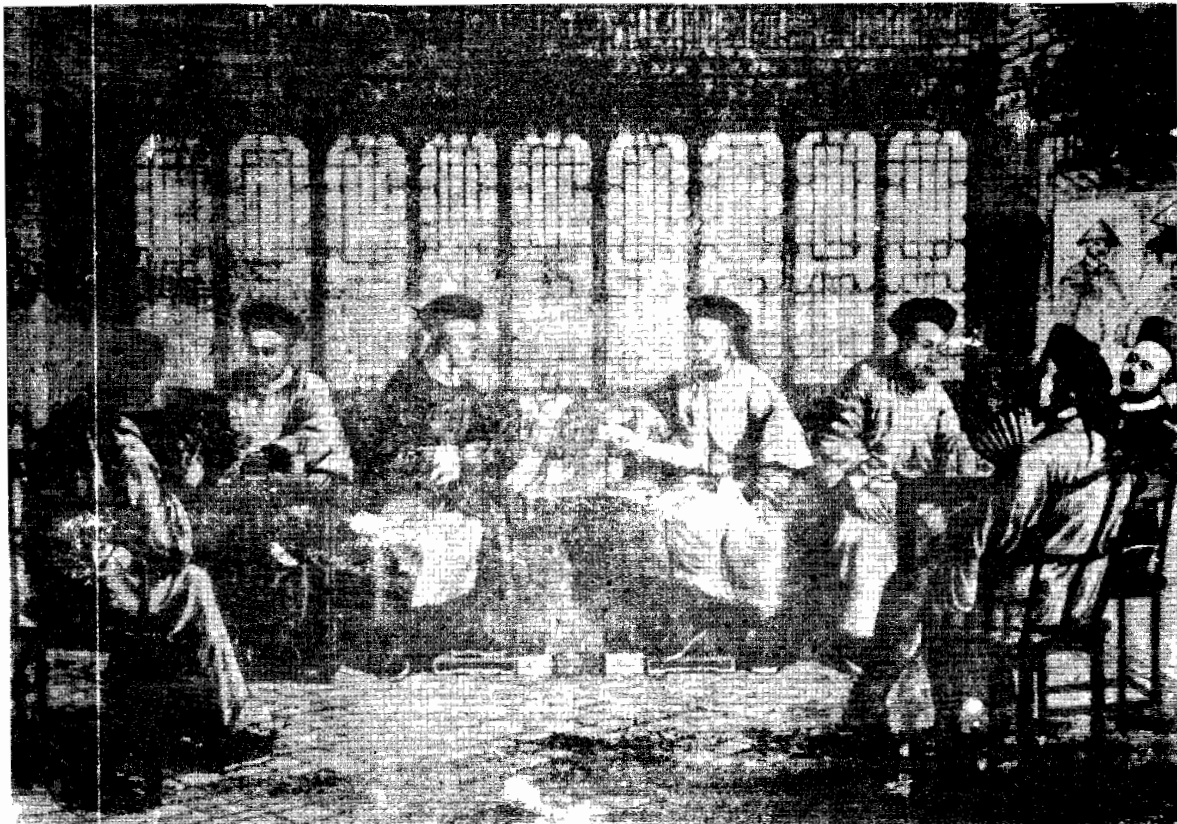
20) सुंगली येमेन (विदेश विभाग) का अन्दरूनी भाग

21) कैंग यू-वी

具呈舉人康祖詒等為安危大計乞下
明詔行大賞罰遷都練兵變通新法以塞和款而拒外夷保疆土而延
國命呈請代
奏事竊聞與日本議和有割奉天沿邊及臺灣一省補兵餉二萬萬兩及通商蘇
杭機器洋貨沿行內地免其釐稅等款此外尚有繳械獻俘遷民之說閱上
海新報天下震動聞
聞京師部人情洶洶又聞臺灣臣民不敢奉
詔思戰
本朝人心之固斯誠
列祖
列宗及我
皇太后皇上深仁厚澤涵濡煦育數百年而得此然伏下風數日換約期迫矣傳聞
明詔赫然收拾日者之人心正議臣之罪甘思大命善柔其民以

22) कैंग य-वी द्वारा सम्राट को दिए गए मैमोरियल का एक पृष्ठ

23) 1898 के सुधार आन्दोलन के समय प्रकाशित कुछ पत्रिकाओं के आवरण पृष्ठ

24) साम्राज्ञी डोवेजर ज्य-त्शी
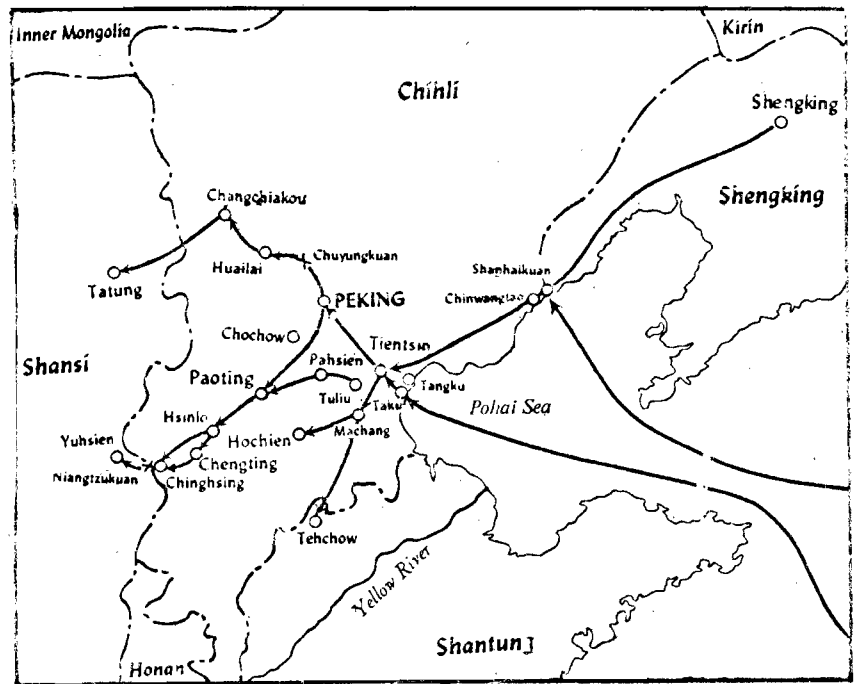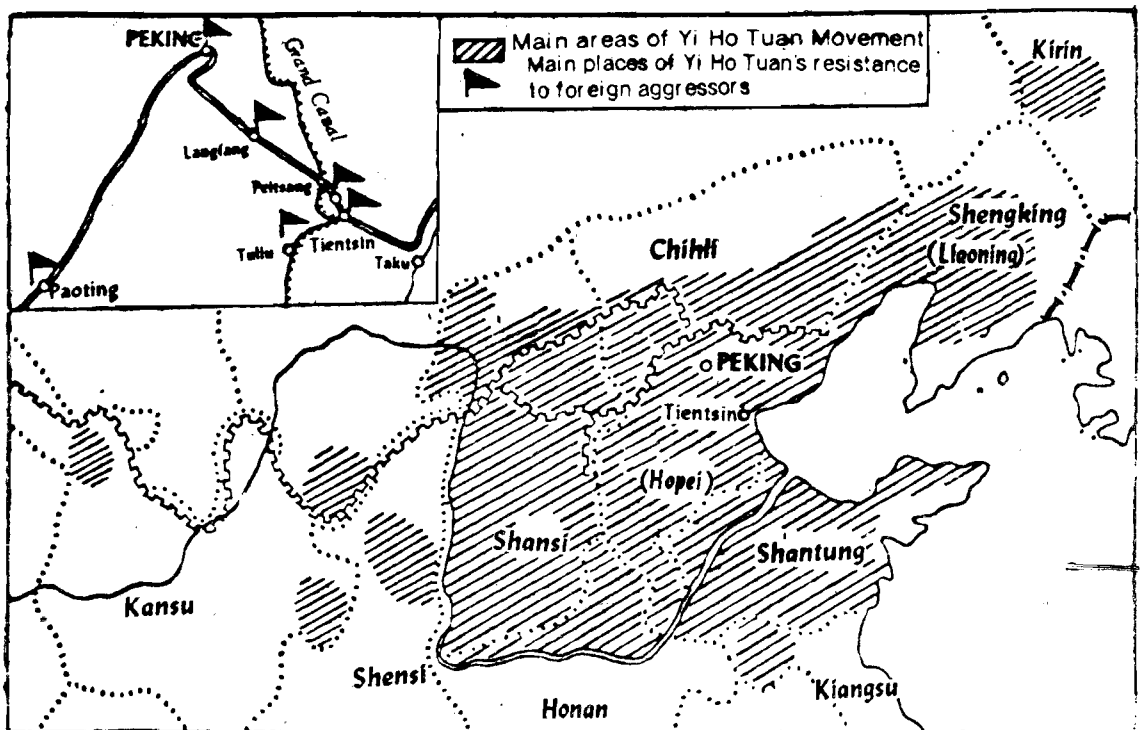
मानचित्र – 2

मानचित्र ३ – पश्चिमी ताकतों की सेनाओं द्वारा बॉक्सरों के विरुद्ध अपनाया गया रास्ता

25) ओकूमा शीजीनोब

26) मेजी संविधान का लागू किया जाना

27) सुन यात सेन

孫文

28) सोसाइटी फौर चाइनीस रिवाइवल का घोषणा पत्र

29) चिन जिन – जो कि एक स्त्री-योद्धा के नाम से भी जानी जाती है - ने 1911 की क्रांति की भूमिका तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
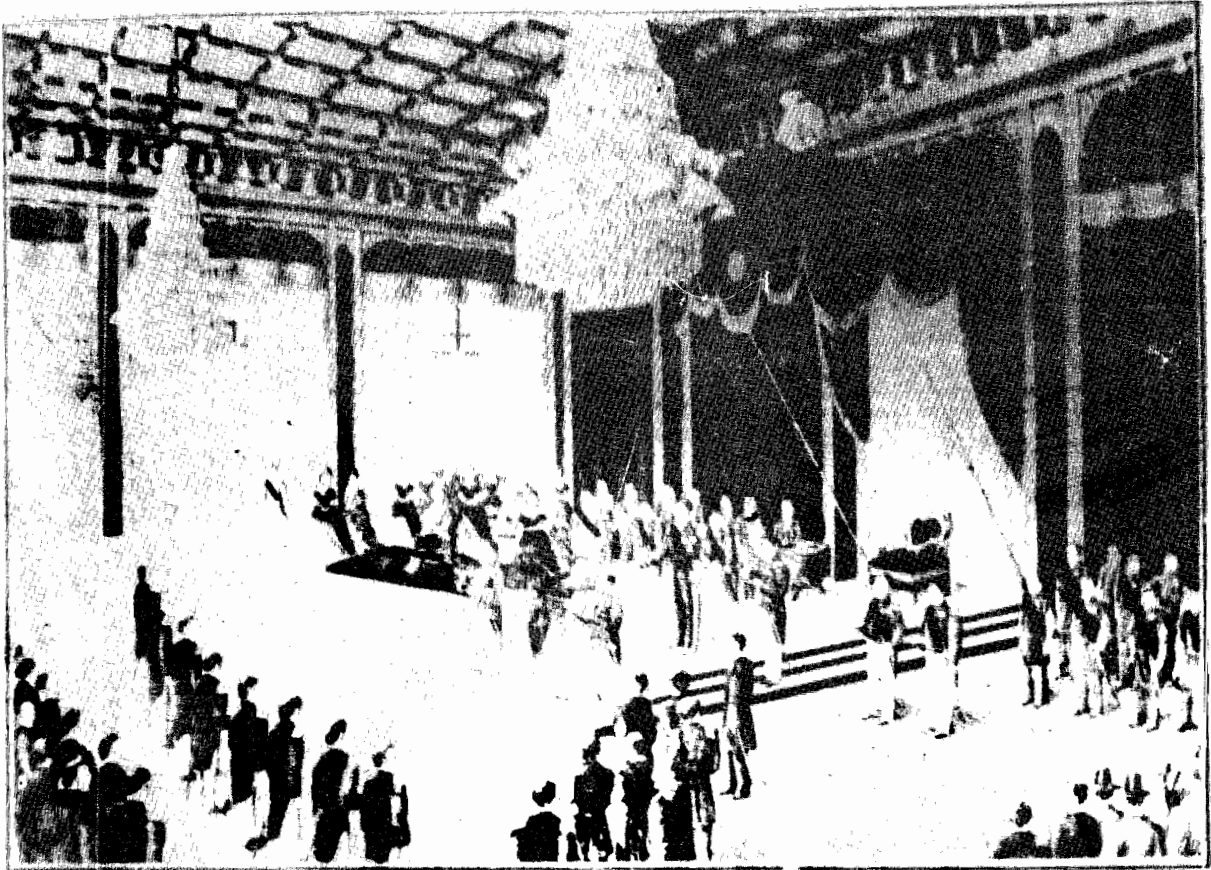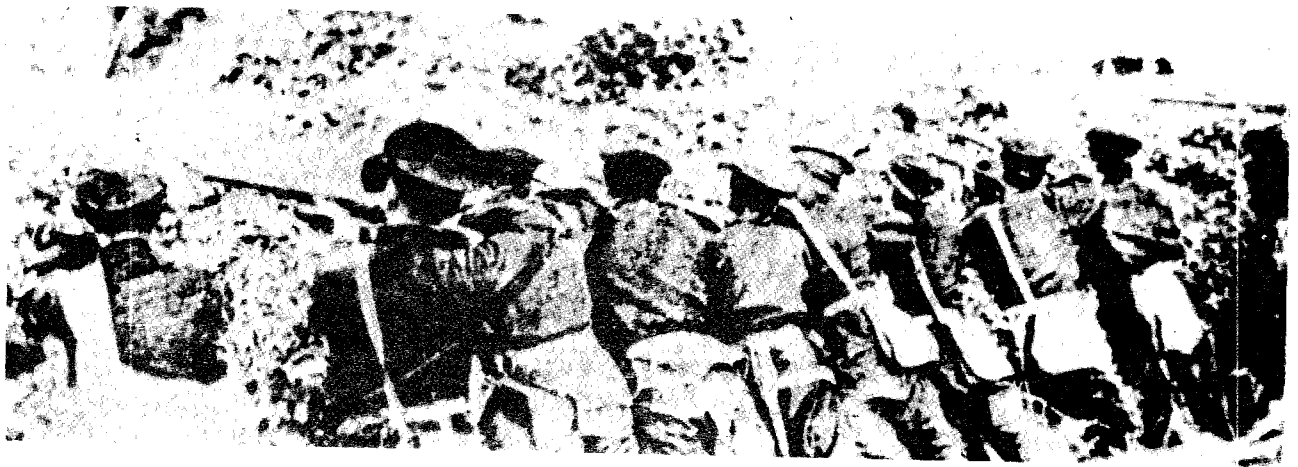
30) 1911 की क्रांति के दौरान सशस्त्र विद्रोह

31) क्रांतिकारों का प्रचार करने वाली किताबें और पत्रिकाएं

32) वूचंग विद्रोह 1911

33) 1911 की क्रांति में जनता द्वारा भाग लिया जाना